# पुष्यभूति राजवंश का महान शासक हर्ष: शासन, सामाजिक,आर्थिक राजनीतिक जीवन

डॉ विभूति भूषण
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

SNSRKS, कॉलेज सहरसा

**भाग:-4**

**सामाजिक आर्थिक स्थिति (Social economic condition of Harshvardhan period)**

हर्ष कालीन समाज वर्णाश्रम व्यवस्था पर आधारित था| चारों वर्णों के अतिरिक्त समाज में अनेक जातियों एवं उपजातियां भी थी| ब्राह्मणों को समाज में सर्वोच्च स्थान था|

तत्कालीन समाज में सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन वैश्य शूद्र की स्थिति में आया| इन दोनों वर्गो के मध्य की दूरी कम होने लगी| इनके द्वारा राज पद संभालने का भी उल्लेख मिलता है| जनसंख्या का एक बड़ा वर्ग अत्यंजो का था, जो नगर के बाहर रहते थे|

अनुलोम तथा प्रतिलोम विवाह, अंतरजातीय विवाह, बहु विवाह, सती प्रथा तथा बाल विवाह का प्रचलन था| हालाँकि पर्दा प्रथा एवं पुनर्विवाह का उल्लेख नहीं मिलता|

लोग शाकाहारी और मांसाहारी दोनों थे| लोग मदिरापान भी करते थे| गेहूं तथा चावल मुख्य खदान था और स्त्री एवं पुरुष दोनों आभूषणों के प्रेमी थे|

Harshvardhan कालीन भारत की आर्थिक दशा उन्नत थी| कृषि उद्योग एवं व्यापार अच्छी अवस्था में थे| लोगों की आजीविका का मुख्य आधार कृषि था| वस्त्र उद्योग उन्नत अवस्था में था| सोने चांदी की मुद्रा के आलावा कौड़ियों एवं मोतियों का व्यवहार भी मुद्रा के रूप में होता था|

भारत दक्षिण पूर्व एशियाई देशों से अपने पूर्वी बंदरगाहों से व्यापार करता था| ताम्रलिप्ति व भड़ौच उस समय के प्रसिद्ध बंदरगाह थे| निर्यात के मुख्य वस्तुएं सूती वस्त्र, गरम मसाले, हाथी दांत एवं विलासिता की सामग्री थी जबकि आयात के मुख्य वस्तुएं सोना चांदी एवं घोड़ा आदि थी| कुछ नगर अपने व्यापार वाणिज्य के लिए काफी प्रसिद्ध थे| जैसे थानेश्वर, मथुरा एवं उज्जैन|

हालाँकि साहित्यिक साक्ष्याई दृष्टिकोण से Harshvardhan का काल समृद्धि एवं सपन्नता का काल था लेकिन भौतिक प्रमाण इसके विपरीत मिलते है| भौतिक प्रमाण के आधार पर इस समय काल को आर्थिक दृष्टि से पतन का काल कहा जा सकता है|

**धार्मिक जीवन एवं भाषा साहित्य**

Harshvardhan के पूर्वज भगवान सूर्य एवं शिव के उपासक थे| हर्ष भी शुरुआत में शैव धर्म का अनुयाई था परंतु दिवाकर मित्र एवं ह्वेनत्सांग के प्रभाव से बाद में बौद्ध अनुयाई हो गया|

हर्ष बौद्ध धर्म की महायान शाखा का संपोषक था| अन्य धर्मों में महायान धर्म की उत्कृष्टता प्रदर्शित करने के लिए उसने कन्नौज में विभिन्न धर्मों एवं संप्रदायों के आचार्यों की एक विशाल सभा बुलवायी| इस सभा की अध्यक्षता ह्वेन त्सांग ने की| इसी अवसर पर संधाराम में आग लगाने पर हर्ष ने 500 ब्राह्मणों को निष्काषित कर दिया|

बौद्ध धर्म का समर्थक होने के बावजूद भी हर्ष ब्राहमण धर्म में अभिरुचि रखता था| वह हर पांचवे वर्ष प्रयाग में महामोक्ष परिषद् का आयोजन करता था|

Harshvardhan स्वयं उच्च कोटि का विद्वान था तथा वह विद्वान को संरक्षण प्रदान करता था| उसके काल के प्रसिद्ध विद्वान बाणभट्ट, मयूर, मातंग, दिवाकर आदि थे|